The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 6 | June 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

महादेवी वर्मा की लेखनी में स्त्री-चेतना के स्वर

शिवानी जायसवाल

शोधार्थिनी, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

Jaiswalshivani549@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

बीज शब्द:

स्त्री विमर्शअन्याय ,, असमानता के प्रति प्रतिकारप्रतिरोध का , स्वर, समानता, न्याय, जागरूकता

शोध संक्षेपिका

आज स्त्री विमर्श की चर्चा हर ओर सुनाई पड़ रही है। महादेवी जी ने इसकी पृष्ठभूमि बहुत पहले ही तैयार कर दी थी। 1942 में प्रकाशित 'श्रृंखला की कड़ियां' को सही अर्थों में स्त्री विमर्श की प्रस्तावना के रूप में देखा जा सकता है, जिसमें सामाजिक समस्याओं विशेषकर स्त्री विमर्श से संबंधित उनके विचारात्मक निबंध संकलित हैं। इन निबंधों के माध्यम से भारतीय स्त्रियों की विषम परिस्थितियों को अनेक दृष्टि बिंदुओं से देखने का प्रयास किया गया है। महादेवी जी उस दौर में लिख रही थीं जब भारत में स्त्रियों के अधिकारों और बराबरी के सवालों की कोई चर्चा भी नहीं थी, कन्या वध आम बात थी और औरतों की गुलाम स्थिति पर कोई मुखर सवाल नहीं था। धर्म, समाज, रीति, परंपरा उसे कहीं भी बराबरी का हक देने को राजी नहीं थे। ऐसी स्थिति में अन्याय और असमानता के प्रति प्रतिकार और हक, अधिकार, बराबरी जैसे उन्नत विचारों को मुखर रूप से कलमबद्ध करना निःसंदेह ही महादेव वर्मा जी के असाधारण व्यक्तित्व को दर्शाता है और इस बात की भी पुष्टि करता है कि तत्कालीन दौर में स्त्री विमर्श में प्रतिरोध का जो स्वर इतने मुखर रूप से साहित्य और समाज का मुद्दा बन गया है और सशक्त रूप से समानता और न्याय के प्रति जागरूक हैं उसका स्रोत काफी हद तक महादेवी जी की श्रृंखला की कड़ियां से माना जा सकता है।

"तू ना अपनी छांह को अपने लिए कारा बनाना! जाग तुझको दूर जाना।"[1] हाशिये का समाज युगों से हिंदुस्तान के इतिहास की सच्चाई रही है जो आज भी अपने नए-नए कलेवर में अनवरत जारी है। दमित, उत्पीड़ित, शोषित तबके का ये समाज ही असल में दलितों, सर्वहारा और स्त्रियों का समाज है। जबकि स्त्री होना ही अन्याय और असमानता का पर्याय बन गया है ऐसे में ये कहना गलत नहीं होगा कि स्त्रियां गुलामी की दोहरी-तिहरी स्तर तक की मार झेलने को मजबूर हैं। हमारे शास्त्र हों या परंपरागत न्याय विधान हर जगह स्त्रियों को त्याग और ममतामयी देवी के कर्तव्यबोध के बोझ से ढंककर, उनके अधिकारों और व्यक्तित्व के प्रति अन्याय ही अधिक हुआ है। लेकिन इन सभी बातों के साथ ही यह बात भी सच है कि जहां अन्याय और असमानता होती है वहां प्रतिरोध के स्वर भी मुखर होते हैं जो अपने हक और बराबरी के अधिकारों की मांग के संगठित स्वर बन जाते हैं। स्त्री-विमर्श भी न्याय और समानता की इसी चेतना से लैस एक विचारधारा है जो स्त्रियों के अस्तित्व, उनके स्वतंत्र व्यक्तित्व और अधिकारों के प्रति जागरूक करती है। आज स्त्री- विमर्श की चर्चा हर ओर सुनाई पड़ रही है, स्त्रियों के अधिकारों और समानता को लेकर आंदोलन, वाद-विवाद हमारे साहित्य और समाज के अलग-अलग पहलुओं में देखने को मिल ही जाते हैं। देश-विदेश तक के लेखक-लेखिकाओं एवं बुद्धिजीवियों के विमर्श और लेखन चर्चा का विषय बने हुए हैं और उत्तरोत्तर प्रगति की दिशा में बढ़ रहे हैं. ऐसे में जब हम इनकी पृष्ठभूमि की बात करेंगे तब हमें इन विचारों की शुरुआत और परिपक्वता की प्रक्रिया को देखना होगा। हिंदी साहित्य में स्त्री- मुक्ति की ये पृष्ठभूमि महादेवी वर्मा ने बहुत पहले तैयार कर दी थी। महादेवी जी के लेखनी के विविध आयाम है जिनमें व्यक्ति की स्वतंत्र चेतना और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नागरिक स्त्रियां, दलित, शोषित, उत्पीड़ित जनता का स्वर सम्मिलित है। इनमें स्त्री चेतना और मुक्ति के प्रश्न महादेवी की लेखनी के प्रमुख के योगदान हैं। चाहे उनके निबंध 'श्रृंखला की कड़ियां' हो या उनके रेखाचित्र, संस्मरण और उनके स्त्री-पात्र इन सब में स्त्री जीवन की समस्याओं पीड़ा-दर्द स्त्री-पुरुष संबंध, स्त्री जीवन के विविध आयाम और स्त्री अस्मिता के सवाल स्त्री-विमर्श की प्रस्तावना के रूप में देखे जा सकते हैं। महादेवी वर्मा ने स्वयं कहा भी है कि "अन्याय के प्रति मैं स्वभाव से असहिष्णु हूं।"[2] महादेवी के इस वक्तव्य से ही उनकी विद्रोही चेतना का आकलन किया जा सकता है।

महादेवी के लेखन को एक तरह से स्त्री-प्रतिरोध की शुरुआत भी कह सकते हैं जो उनके निबंधों और स्त्री- पात्रों में दृष्टव्य ही है। प्रतिरोध का ये स्वर महादेवी जी की वैचारिक परिपक्वता का स्वर है। महादेवी की चिंता स्त्री जीवन की कठिनाइयों की चर्चा करना मात्र नहीं है बल्कि उनकी मुख्य चिंता उस समाज की है जिसमें आधे नागरिक समाज को समुचित सुविधाएं और अधिकार प्राप्त न होने के कारण भारतीय समाज का स्वस्थ स्वरूप उभरकर सामने नहीं आ पा रहा है। एक स्वस्थ समाज के

लिए महादेवी आधे नागरिक समाज के अधिकारों का सवाल उठाती हैं। अपने निबंध 'श्रृंखला की कड़ियां' को उन्होंने 'जन्म से अभिशप्त, जीवन से संतप्त किंतु अक्षय वात्सल्य वरदानमयी भारतीय नारी को' समर्पित किया है। महादेवी का स्त्रियों का 'जन्म से अभिशप्त' कहना भारतीय समाज में उनकी जगह और अस्तित्व के सवाल भी मुखर करता है। हमारे समाज में ज्यादातर या तो स्त्रियों को देवी बना दिया जाएगा या फिर घर की किसी निर्जीव निकृष्ट चीज का स्थान प्राप्त होगा जिसमें उनका अस्तित्व ही विलीन हो जाता है। जबकि जरूरत उन्हें सिर्फ इंसान समझे जाने की है या उनके अस्तित्व को स्वीकारे जाने की है। औरतों ने कभी देवी नहीं बनना चाहा और न ही व्यक्तित्वहीन कोई तुच्छ प्राणी ही, ये सारी उपाधियां उन पर पितृसत्तात्मक सामंती समाज की थोपी हुई हैं। उन्हें मात्र मनुष्य के रूप में स्वीकार किए जाने की चाह है, अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की पहचान ही उनकी जरूरत है लेकिन इसी मूल प्रकृति की पहचान ही उनके संघर्ष का विषय बन गई है। इसी विषय पर अनामिका कहती हैं कि "उसके मनुष्य को स्वीकार करना आज मानवता के सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में एक है।"[3]

स्त्रियों का भी अपना एक स्वतंत्र व्यक्तित्व होता है, वो पुरुष की छाया मात्र ही नहीं होती बल्कि इससे इतर अपने गुणों-अवगुणों के आधार पर किसी भी सामान्य मनुष्य की भांति समाज के विकास का कारण हो सकती है, अपने व्यक्तित्व के आधार पर ही जीवन में किसी भी परिणाम की समान रूप से भागीदार हो सकती हैं, इसके लिए उन्हें किसी पुरुष की छाया बनकर उनके किए का परिणाम बनने की आवश्यकता नहीं है। महादेवी जो स्त्रियों को इसी मुक्ति की ओर जागृत करने का प्रयास करती हैं और उन्हें किसी के अनुसरण या अंधानुकरण से आगे बढ़ स्वयं को प्राथमिकता देने पर जोर देती हैं। इसी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए वे लिखती भी हैं कि "एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास की सबको आवश्यकता है, कारण, बिना इसके न मनुष्य अपनी इच्छा शक्ति और संकल्प को अपना कह सकता है और न अपने किसी कार्य को न्याय-अन्याय की तुला पर तोल ही सकता है।"[4]

महादेवी वर्मा स्त्रियों को उनके नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूक करने की चेष्टा करती हैं और संपन्न और जागृत महिलाओं से भी यह आह्वान करती है कि वह अपनी चेतना का सदुपयोग समाज की अन्य नारियों को चेतनशील करने, उन्हें जागृत करने में करें क्योंकि पीढ़ियों से चली आ रही इन बेड़ियों को तोड़ना एक या दो व्यक्ति के बस की बात नहीं इसके लिए समाज के अधिक से अधिक लोगों को सहयोग करना होगा, चाहे इसके लिए उन्हें जीवन में कुछ त्याग भी करने पड़े लेकिन समाज के सामूहिक समुचित विकास के लिए चेतनशील स्त्रियों को इसके लिए आगे आना होगा। महानतम सभ्यता कहे जाने वाले इस देश में सदियों से स्त्रियों की दयनीय स्थिति रही है। बाद के दिनों में उनके लिए कुछ कानून बने लेकिन समय-समय पर

आधुनिक स्वतंत्र देश के न्याय विधान कानूनों ने भी स्त्रियों के अधिकार के साथ अन्याय किया है। स्त्रियों को पुरुषों के अस्तित्व से ही पूर्ण माना जाता है, उन्हीं के इर्द-गिर्द उनकी पहचान की जाती है, प्राचीन समाज में मृत पति के लिए औरत को जिंदा जला देना आम बात थी और आज भी विधवा के पति का निर्जीव स्मारक हो जाने को ही उसकी नियति मान जाता है। औरत की निजता, उसका जीवन, उसकी इच्छाएं, उसके सपने इन सब के लिए उसे संघर्ष करना होता है लेकिन ये संघर्ष भी स्थिति के ज्ञान के बिना अधूरी है बल्कि अधूरी ही नहीं अत्यधिक दुष्कर है। औरतें जब तक अपनी बेड़ियों को पहचान नहीं लेती तब तक उनकी मुक्ति का मार्ग उन्हें नहीं मिल सकता है। स्त्रियों को परंपरागत दृष्टि से एक निश्चित मापदंड में एक सांचे में ढालने की कोशिश होती है और जो स्त्री इस लीक से हटकर चलती है उसके लिए समाज ने कुलटा कुलक्षिनी बेहया जैसी तमाम उपाधियां बना रखी हैं। समाज की ऐसी परंपराओं और रूढ़ियों का प्रतिकार करना किसी भी नागरिक की जिम्मेदारी होनी चाहिए लेकिन जिन्हें इस व्यवस्था से कोई परेशानी नहीं है, जो व्यवस्था बनाई ही पुरुषों द्वारा उनके आराम के लिए है उसका विरोध वो क्योंकर करने लगे, इसलिए महिलाओं को ही इसकी जिम्मेदारी संभाल लेनी चाहिए। इस यात्रा में कुछ संवेदनशील पुरुष भी होते हैं जो मुक्ति के संघर्ष में सहयोग करते हैं, इसलिए महादेवी ने स्त्री और पुरुष दोनों के संबंधों को एक-दूसरे के सहायक के रूप में भी माना है। स्त्री और पुरुष एक दूसरे के विरोधी नहीं अपितु सहयोगी बनकर काम कर सकते हैं लेकिन जरूरत है उनकी संवेदनशीलता और चेतना संपन्न होने की। इस विद्रोह और संघर्ष में व्यक्ति, परिवार एवं समाज की बहुत सी व्यवस्थाएं अस्त-व्यस्त हो जाती हैं। लेकिन ये आशा बनाए रखना जरूरी है कि पुरानी रूढ़िवादी चीज़ों के ध्वंस के बाद ही नए समानतावादी समाज का निर्माण होता है।

महादेवी कहती हैं कि "हमारी मिथ्या परंपरा की दुहाई देते रहना केवल व्यक्तियों के लिए नहीं वरन् समाज और राष्ट्र के लिए भी घातक सिद्ध होगा।"[5] परंपराएं मनुष्य के विकास के लिए उपयोगी मूल्यों से संबद्ध होनी चाहिए न कि मनुष्यों में भेद करती पीछे धकेलती रूढ़ियों से। "समस्त सामाजिक नियम मनुष्य की नैतिक उन्नति तथा उसके सर्वतोन्मुखी विकास के लिए अविष्कृत किए गए हैं। जब वे ही मनुष्य के विकास में बाधा डालने लगते हैं तब उनकी उपयोगिता नहीं रह जाती।"[6] ऐसी रूढ़ीगत परंपराओं का नष्ट हो जाना ही मनुष्य जाति के हित में है। रूढ़ियां वैसे भी समाज को पीछे की ओर ही धकेलती हैं और शोषण का आधार बनती हैं। जिस समाज के निर्माण का आधार ही शोषण और दमन पर टिका होगा वह समाज कभी विकास नहीं कर सकता है। महादेवी स्त्री मुक्ति के मार्ग में स्त्रियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता और मजबूती को बहुत ही सशक्त समाधान के रूप में देखती हैं। स्त्रियां यदि आर्थिक रूप से पुरुषों की भांति ही आत्मनिर्भर रहें तब वे बहुत सी बेड़ियों को तोड़कर फेंक

सकती हैं क्योंकि तब उन्हें किसी पुरुष के सहारे की जरूरत नहीं होगी और वो अपने फैसले खुद ले सकती हैं। लेकिन इसके लिए भी स्त्रियों का शिक्षित होना, जागरूक होना बहुत जरूरी है। आज कानून में महिलाओं को भी पैतृक संपत्ति में अधिकार मिल गया है लेकिन कितनी महिलाएं हैं जिन्हें सच में यह अधिकार प्राप्त है? इसीलिए उनका जागरूक होना बहुत जरूरी है। समाज में विवाह परंपरा भी काफी हद तक स्त्रियों के शोषण का कारण बन जाती है क्योंकि विवाह प्रेम पर नहीं कुछ सामाजिक बंधनों से बंधे होते हैं। विवाह प्रेम और जागरूकता से बंधे हों तब तो ठीक वरना महिलाओं की स्थिति पहले पिता फिर पति और फिर अपने बेटे की निर्भरता पर ही टिकी रह जाती है, जो उनकी मानसिक गुलामी की वजह बनती है। इस मानसिक गुलामी से आजादी शिक्षा और जागरूकता से ही प्राप्त हो सकती है। महादेवी वर्मा लिखती हैं "हमारी मानसिक दासता, मानसिक तंद्रा के दूर होते ही न कोई वस्तु हमारे लिए अलभ्य रहेगी, न कोई अधिकार दुष्प्राप्य, कारण, अपने स्वत्वों से परिचित व्यक्ति को उनसे वंचित रख सकना कठिन ही नहीं असंभव है।"[7]

महादेवी की रचनाओं में हर वर्ग की स्त्रियों की स्थिति-परिस्थिति का चित्रण किया गया है। महादेवी की चेतना में मात्र स्त्री जाति की नहीं बल्कि विभिन्न वर्गों की आर्थिक-सामाजिक परिस्थितियों के विश्लेषण की परिपक्वता मिलती है। महादेवी ने उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग की श्रेणियां में बांटकर संपूर्णता में स्त्रियों की दशा का वर्णन किया है। उच्च वर्गीय संपन्न महिलाओं के विषय में महादेवी कहती हैं कि ज्यादातर स्त्रियाँ अपने घर की साज-सज्जा जय संतान या व्यक्तिगत विनोद एवं परंपरा-पालन में ही समय गंवा देती हैं। आरामदेह जिंदगी के भ्रम और लालसा में वह जीवन भर अलग ही तरह की बेड़ियों में कैद रहती हैं। हालांकि साधनसंपन्न महिलाओं के पास सुशिक्षित होने और देश-दुनिया को देखने-समझने के अवसर औरों से अधिक होते हैं इसलिए कम से कम जो महिलाएं चेतनासंपन्न हो चुकी हैं उन्हें असंख्य वाणीहीन स्त्रियों की प्रतिनिधि बनकर उनकी आवाज को मुखर करना चाहिए और उनके संघर्षों, उनके जीवन को समझने की एवं उन्हें अपने साथ विकास पथ पर आगे बढ़ाते रहने की चेष्टा करनी चाहिए। मध्य श्रेणी की महिलाओं की स्थिति सबसे अधिक सोचनीय है, उन्हें अपने गृह के कार्यों से और समाज के निश्चित मापदंडों पर खरे उतरने से ही फुर्सत नहीं मिल पाती है कि वह अपने बारे में भी सोच सकें। शुरू से ही उन्हें ऐसे माहौल में रहने और उसका समाधान निकालने के लिए ही प्रशिक्षित कर दिया जाता है जिससे वो जीवन भर अपने गृह की व्यवस्थाओं को ही संभालने में लगी रहती हैं। शुरू से उनके व्यक्तित्व को इतना दुर्बल कर दिया जाता है कि उनमें अपने व्यक्तित्व को लेकर आत्मविश्वास ही नहीं आ पाता, सांसारिक संघर्षों से भरी उनकी जिंदगी में उन्हें स्वावलंबन और आत्मविश्वास की बहुत अधिक आवश्यकता है। निम्न श्रेणी की महिलाओं की स्थिति इन दोनों स्तरों की स्त्रियों की तुलना में

'स्त्री होने के संदर्भ में' अपेक्षाकृत अधिक बेहतर है। श्रमजीवी श्रेणी की महिलाएं अपना घर चलाने के लिए पुरुषों के साथ-साथ स्वयं भी जीविकोपार्जन करती हैं, घर-बाहर के कामों में हाथ बटाती हैं, इसलिए फैसलों में भी ज्यादातर दोनों की ही भागीदारी होती है। लेकिन इन सबके बावजूद भी शोषण का जो चक्र सामंती पूंजीवादी व्यवस्था से चलता है अंतत वह स्त्रियों पर ही आकर खत्म होता है, गाली- गलौज, मारपीट उन्हें भी झेलने पड़ते हैं, अंतर इतना ही है कि वह अपने प्रति किए जा रहे इस तरह के व्यवहार का प्रतिकार भी खुलकर करती हैं। आर्थिक रूप से स्वावलंबी होने के कारण वो अपने आश्रय या जीवनयापन के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहती जो उनकी मजबूरी का कारण बने। श्रमजीवी वर्ग के जीवन के अपने संघर्ष हैं। जीवनयापन, सम्मानजनक स्थिति, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि मूलभूत चीजों के लिए भी उन्हें संघर्ष करना होता है। किसी भी समाज के विकास के लिए इन सभी श्रेणियों का विकसित होना, जागरूक होना और विकास प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना बहुत अधिक आवश्यक है। महादेवी कहती हैं कि "कृषक तथा श्रमजीवी स्त्रियों की इतनी अधिक संख्या है कि बिना उनकी जागृति के हमारी जागृति अपूर्ण रहेगी और स्वत्व अर्थहीन समझे जाएंगे"[8]

उपसंहार

महादेवी वर्मा की रचनाएं स्त्री के व्यक्ति स्वातंत्र्य और मुक्ति की रचनाएं हैं जिनमें स्त्रियों का पुरुषों से विरोध नहीं बल्कि मुक्ति के मार्ग में सहचार्य बनाए रखने और संतुलित मानवीय जीवन की प्रेरणा दिखाई पड़ती है। मैनेजर पांडे के शब्दों में "महादेवी वर्मा भारतीय स्त्री के जीवन के अनुभवों और आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति करने वाली कलाकार हैं, उसके जागरण का अभियान चलाने वाली कार्यकर्ता और उसकी पराधीनता के जटिल रूपों का विश्लेषण तथा स्वाधीनता की संभावनाओं को तलाश करने वाली दार्शनिक भी हैं।"[9] महादेवी की रचनाओं में स्त्री की कोमल भावनाएं उनकी ममतामयी प्रकृति स्त्रियों की कमजोरी का कारण नहीं है बल्कि उनका अबोधपन उनके इस स्थिति का जिम्मेदार है। महादेवी कहती हैं "जो देश के भावी नागरिकों की विधाता हैं, उनकी प्रथम और परम गुरु हैं, जो जन्म भर अपने आपको मिटाकर दूसरों को बनाती रहती हैं वे केवल तभी तक आदरहीन मातृत्व तथा अधिकार शून्य पत्नीत्व स्वीकार करती रह सकेंगी जब तक उन्हें अपनी शक्तियों का बोध नहीं होता। बोध होने पर वे बंदिनी बनाने वाली श्रृंखलाओं को स्वयं तोड़ फेकेंगी।"[10]

संदर्भ

1. सं1 महादेवी साहित्य खंड ,निर्मला जैन ., वाणी प्रकाशन.चतुर्थ सं ,, 2017, पृ .280

2. महादेवी वर्मा.पंचम सं ,लोकभारती प्रकाशन ,शृंखला की कड़ियां ,, 2019, पृ .10
3. अनामिकास्त्रीत्व का मानच ,ित्र ,सारांश प्रकाशन ,प्रस्तावना ,1999 .पृ ,11
4. महादेवी वर्मा :.पंचम सं ,लोकभारती प्रकाशन ,शृंखला की कड़ियां ,2019 .पृ ,11
5. वही .पृ ,22
6. वही .पृ ,21
7. वही .पृ ,23
8. वही .पृ ,25
9. मैनेजर पांडे .पृ ,नेशनल बुक ट्रस्ट ,संकलित निबंध ,228
10. महादेवी वर्मा शृंखला की ,कड़ियां :.पंचम सं ,लोकभारती प्रकाशन ,2019 .पृ ,22